उम्मत की एकता की घोषणा

इस्लामी फ़िक्ह अकेडमी इंडिया की जानिब से दसवाँ फ़िक्ही सेमिनार हज हाउस में 21–24 जमादिउस्सानी 1418 मुताबिक 24–27 अक्टुबर 1997 ई0 को आयोजित हुआ। इसमें देश भर से आये विद्वानों, धर्म शास्त्रियों, और मुफ्तियों ने बड़ी ग़ौर फ़िक्र और दर्दमंदी के साथ अपने हस्ताक्षर से निम्मलिखित धोषणा पत्र को जारी किया।

प्रस्तावः

हम भारतीय मुसलमान इस समय विभिन्न प्रकार की समस्याओं में घिरे हुए हैं। इन समस्याओं में सबसे बड़ा सवाल अपने दीन व ईमान और तहज़ीब व पहचान को बाक़ी रखने का है। इस भावना को हमें अपनी नई पीढी में भी विकसित करना है ताकि इस सरज़मीन में इसलाम की खेती हरी भरी रहे, और हमारे वजूद से यहां को लोगों को ईमान की रौशनी मिले और उन्हें फ़ायदा पहुंचे।

इस महत्वपूर्ण और बुनियादी काम के लिए सबको जति बिरादरी और क्षेत्रवाद की सीमाओं से ऊपर उठकर और मसलक व नज़रिए के सारे इख्तिलाफ़ात को दर किनार करके अल्लाह की रस्सी को मज़बूती के साथ थामना है और इस हक़ीक़त को समझना है कि एकता और इत्तेहाद में हमारी ज़िन्दगी है और आपसी झगड़ों और मतभेद में हमारी मौत। पिछले कुछ समय से यह बात महसूस हो रही है कि मुसलमानों में से कुछ लोग इत्तेहाद और आपसी प्रेम की राह को छोड़ कर आपस के झगड़ों और इख्तिलाफ़ की रविश पर बढ रहे हैं। इस स्थिति में महसूस करते हुए इस्लामी जगत के प्रतिष्ठित संगठन ''राबता आलम-ए-इस्लामी'' ने अपने एक अधिवेशन (24-27 सफ़र 1408 हिजरी में आयोजित सम्मेलन) में दुनिया के सारे मुसलमानों से आपस में प्रेम, एकता और भाई चारे को बनाए रखने की अपील की है और कहा है कि मुसलमान अपने फ़िक्ही और मसलकी इख्तेलाफ़ में संयम और संतुलन बनाए रखें और एक दूसरे का दिल दुखाने वाली बात न करें।

आइये हम भी इस मौक़े पर इस सबक को ताज़ा करें किः

हम एक खुदा के बंदे हैं, हम सब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह का आख़री रसूल मानते हैं। और हमारा ईमान है कि क़ुरआन करीम अल्लाह की आख़री किताब है। हम नमाज़ पढते समय अपना मुंह काबा की तरफ़ करते हैं। और काबा शरीफ़ को अपना क़िबला मानते हैं। हमारा दीन इस्लाम है और हमने अपनी निजात के लिए इस दीन को अपनाया लिया है।

हम अहद करते हैं किः

1- हम तमाम मुसलमान चाहे किसी जात बिरादरी क्षेत्र और मसलक के हों, आपस में एक रहेंगे और अपने व्यवहार से प्रेम, भाई चारे और समानता का सबूत देंगे।

2- अपनी मसलकी मान्यताओं और मतभेदों का दायरा ज्ञान और खोज की ज़रूरत तक ही सीमित

रखेंगें, और इस आधार पर उम्मत की एकता को प्रभावित नहीं करेंगे।

3- एक दूसरे के इमाम और पेशवा का सम्मान करेंगे और उनके सम्बन्ध में ऐसी बातें नहीं करेंगे जिनसे उनका अनादर होता हो।

4- आपस में भी हम लोग एक दूसरे का आदर सम्मान करेंगे, न हम किसी का मज़ाक़ उडाएंगे, न दिल दुखाएंगे। हम एक दूसरे की जान, माल व इज्ज़त की रक्षा करेंगे।

5- नेकी और भलाई के काम में हम एक दूसरे की मदद करेंगे, एक दूसरे के ख़िलाफ़ पोस्टर बाज़ी, अखबारी बयान बाज़ी और आरोप प्रत्यारोप नहीं करेंगे।

6- हम अपने विवादों का निपटारा आपस में ही बात चीत से या शरई अदालतों की मदद से करेंगे।

7- सामाजिक जीवन में हम उदारता, संयम, बर्दाश्त और सुशीलता को व्यवहार में लाएंगे।

8- ज़ात बिरादरी क़बीला और ख़ानदान में उलझकर अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन को किसी भी प्रकार से हानि नहीं पहुँचने देंगे। हम इस बात में विश्वास रखते हैं कि अल्लाह के नज़दीक बडाई और श्रेष्ठता का आधार तक़वा और परहेज़गारी है।

9- हम अपने छोटे मोटे मतभेदों को अपनी आस्था का आधार नहीं बनाएंगे, बल्कि ऐसी इमारत की तरह आपस में जुडे रहेंगे जिसकी सारी ईटे एक दूसरे को सहारा देती हैं।

10- राजनीतिक स्वार्थ और साम्प्रदायिक भावनाएं रखने वाली शक्तियां एक साज़िश के तहत मुसलमानों को गिरोह बंदी में फ़ंसाने की कोशिश कर रही हैं, हम मुसलमान अपनी दीनी सूझ बूझ से ऐसी साज़िश को नाकाम बनाएंगे।

☆☆☆

नोटः इस घोषणा को विद्धान उलमा की उपस्थिति में पढा गया। और मंजूर किया गया।